गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 1150
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

ओ३म्

(वियोग)

॥ संतापचालीस ॥

अर्थात्

श्रीत् मपरम हंस परिव्राजकाचार्य्य श्री १०८ श्रीस्वामी

दयानन्द सरस्वती जी महाराज का

शोक पत्र

कवि कुमार शेरसिंह बर्म्मा

कर्णवास वासी

कृत

डा० ... लाल
पुस्तकालय
संख्या ११५६

भारतबन्धु प्रेस अलीगढ़ में बाबू मुन्नीलाल मैनेजर

के प्रबंध मे छाप कर प्रकाश किया

२४ फरवरी सन् १८८२

प्रथम बार ५०० पुस्तक

कीमत फी पुस्तक /)॥

ओ३म
गुरु विरजानन्द दण्डी
संदर्भ पुस्तकालय
दयानंद महिला महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र
वर्गीकरण नम्बर .....
पु. परिग्रहण क्रमांक .....

भूमिका

यह विधे [illegible] तापचालीस [illegible] म आर्य्यावर्त पत्रमें छपाया गया था परन्तु अब मुझे वहुत मेरे मित्रोंने अनेक वार इसको पुस्तकाकार छपने को कहा तथापि अनेक कारणों से अद्यावधि कुछ न करसका इस समय फिर उतसाह वढा और छपने का मनोर्थ किया काव्य दोष वा लिप्य की भूल चूक को क्षमा करना उचित है ॥

सोरठा

मावस कार्तिक मास। सम्वत् नभ श्रुति ग्रहशशी ॥
कियो ब्रह्मपर वास। श्री स्वामी दया नन्दजी ॥१॥

कबित्त

आज जग अस्त भो विद्या को प्रकाश शेर
छूटि गई धारणा बिनाश भई धी धृती।
देशी औ विदेशिनु हूँशोक छायो ग्रेह ग्रेह
लोक भयो दीन त्यों धरा की गई रती —
हाय हाय हमकों बिसारि कें पधारे आप
परम धाम लब्ध कियो ब्रह्म की लई गती ॥
उन्निस से चालीस कतिक अमावस कूं
त्यागो तन स्वामी श्री दयानन्द सरस्वती ॥२॥

छन्द

द्योस मंगल तिथि अमावस मास कातिक जानिये।
शून्य श्रुति नव इन्दु सम्वत विक्रमी जु वखानिये
प्रहर चौथे देह त्यागो शोक चहुं दिश में छये।
शेर स्वामी श्री दयानद प्राप्त पद अक्षय लयो॥३॥

छप्पय

कियो वेद को भाष्य ताहि मंतर भाषा करि।

विदित करो संसार गये पाषंड सवे जरि ॥
मूरति पूजा मेंटि मेंटि मत बादी दीये ।
जैन पुरान कुरान किरानी सब हत कीये ।
थाप्यो थम्भ जु धर्म को काट्यो जग आवरण जिन
सो स्वामी दयानन्द जू प्राप्त कियो पंचत्व तिन ॥४॥

छप्पय

करिहैं उन्नति कोन कोन भाग्योदय करिहै ।
करिहै को उपदेश कौन चिन्ता कों हरिहै ॥
मातर भाषा कोन वृद्धि करिहै जग माहीं ।
को पौरुष अब करे हमें कोउ दीसत नाहीं ॥
पूत दूत और मूर्त्ति के सत्य अर्थ को अस करे ।
हाय हाय यह शोक बड़ स्वामी जी को कसटरे ॥५॥

छप्पय

हा हत हमरे भाग्य हमें यह दिवस दिखायो ।
फाटत ना क्यों हृदय हाय अस कठिन बनायो ॥
कोन बंधावे धीर दीन ह्वे काहि पुकारें ।
त्राहि त्राहि जगदीश शरण को ताहि विचारें ।
हाय हाय कैसी भई अहो दई कीजै कहा —
दयानन्द पंचत्व भो घोर शोक शंकट महा ॥ ६ ॥

छप्पय

अरे निरदई काल दया तोहि नेक न आवे ।

जो प्रगटे जग माहि ताहि तू तुरतहि खवे ॥
परस्वारथ जे करें तिनहु तू सोचत नाहीं ।
भले बुरे को ज्ञान तनक हू नहिं तो माहीं ॥
धिक तोहि वाहि धिक अति महा जामें तू व्यापत रहे ।
धिक इनहिं उनहिं धिक है सदां जेन तोहि धिक२ कहें ॥७॥

चौपाई

प्रथमहि बधिर भये नहिं काना ।
क्यों सुनते यह शोक बखाना ॥
रसना गलित होय जग सोई ॥
स्वामी शोक कियो नहिं जोई ॥
ते नर निन्दित अधम बखानो ।
जिन्हनु शोक कछु हृदय न मानो ॥
वे जग कुटिल कठोर कलापी ।
जिन्हे न यह दुर्घटना व्यापी ॥ ८ ॥

छप्पय

हा स्वामी हा दयानन्द हा लोक हितैषी ।
अधवर नैया छोड़ करी तुम कैसे ऐसी ॥
कोन लगावे पार अगम यह दीसत है भव ।
पापी नक्र कराल निगलि वैठे जाने कव ॥
विद्या विवेक के डांड़ जे सो तुम बिन साधत न हित ।
हाय मोह या जीव कूं देह त्याग नहिं धरत चित ॥ ६ ॥

छप्पय

अहो मृत्यु तू धन्य जिन्हें तें प्रथमहिं खायो ।
जीवन उनको अधम तिन्हें यह समय दिखायो ॥
फाटत ना यह भूमि सरग हू टूटत नाहीं ।
बालक के सम खेल रचो बिनस्यो छिन मांहीं ॥
देखो कराल या काल कूं अपने ते सपने करे ।
सपने हू ते मेंटि करि परम धाम जिन के करे ॥१०॥

छन्द

अधम पापी नीच दुर्गति पतित अवगुण को भरो ।
होय तिर्थक योनि जाकी मनुजपन ताको जरो ॥
जग आय सुमिरन ना कियो नहि पन्थ वैदिक को गहो ।
शेर जिहि श्री दयानद के शोक करि उरनादहो ॥ ११ ॥

छप्पय

हाय कियो को प्रभू भारतहि तलफत छोड़ो ॥
हम दुखितन को त्यागि इतेते क्यों मुख मोड़ो ॥
जग परकारज करन पैज तुमने जिय धारो ।
ताकों पूरण होत जान किन दई किवारी ॥
हाय२ सूझत न कछु कौन शरण जैयें हरी ।
धर्म्म नाव भव धार में बिन केवट अधवर परी ॥१२॥

दोहा

खंडन करि मूरतिनु को । प्रतिमा अर्थ बताय ।

॥ रुचि सत्यार्थप्रकाश को । संशय दिये नशाय १३॥

छप्पय

विद्या धर्म्म प्रकाश नाश पाषंड कियो जिन ।
मोक्ष मार्ग ब्रतराय कर्म्म बैदिक राखो तिन ॥
वेद भाष्य करि दोष श्रुतिनुहू के सब टारे ।
खंडन कियो अधर्म पुरानी जैनी मारे ॥
देश हितैषिता वृद्धिकिय आर्य्य समाज थापी सभा ।
॥श्री स्वामी दयानन्द जू भये जगत पूरण प्रभा॥ १४॥

छप्पय

भयो धर्म्म अवतार कियो उद्धार हमारो ।
कियो वेद को भाष्य जगत सत अर्थ प्रचारो ॥
गो रक्षा के हेतु बड़ो पुरुषारथ कीने ॥
बाल व्याह के त्याग काज उपदेशहु दीनो ।
दीनो बहाय पाषड सब वेद मार्ग बतलाय के ॥
म्लेच्छन चराये शास्त्र जोतेहू लए मंगवाय के॥ १५ ॥

छप्पय

कौन लावतो वेदजाय जरमनि के देशा ।
को करतो उपदेश कोन हरतो यह क्लेशा ॥
जो हिन्दू इसलाम कोन इनको मत हरतो ।
हस्ताक्षर करवाय गौरक्षा को करतो ॥
आर्य्य समाज की नेवको कोन जगत धरतो भलो

श्रीदयानन्द जू सरस्वती जोनि होत पूरण कला १६ ॥

छप्पय

उन्नति विद्या करी पाठशाला बैठारी ।
योगाभ्यास कराय जुगति ते अजगति टारी ।
पंचयज्ञ उपदेश करो भ्रम सबे मिटायो ॥
कियो प्रणव को अर्थ जगत आवरण हटायो ।
चक्रांकितके धर्म्म की चोरीदईबताय के ॥ कीनो ।
सहाय भारत अधिक श्री दयानन्दजू आयके १७ ॥

सोरठा

जो न होत अवतार दयानन्दको जगत में ।
आर्य्य सुधर्म्म प्रचार शेर कोन करतो भला १८ ॥

छप्पय

भये जगत अवतार कहें शंकर स्वामीको ।
कोई कृष्ण वखान करें मथुरा धामी को ॥
कोऊ धर्म्म को पूत युधिष्ठिरको बतलावें ।
अवधपुरी के राम ताहिको नित जसगावें ॥
जो यह प्रथासनातनी तो या में संशय नहीं ॥ कर ।
तार लियो अवतार यह दयानन्द स्वामीसही १९ ॥

कुंडलिया

रची भूमिका वेदकी तामें अर्थ अनेक ।

कहि२ मेटे दोष सब श्रुतिकी राखी टेक
श्रुतिकी राखी टेक एक ईश्वर को भाखो
दियो अनर्थ बहाय अर्थ वेदनुको राखो ॥
जीति सभा दिग्वजय करि विद्याकी कीनी रुची ।
गोतम अहिलाबत्रकी अति अद्भुत व्याख्यारची २०॥

छप्पय

पोप छिपायो धर्म्म कर्म्म आचार हमारो ।
लोप कियो सन्मार्ग पापको जाल प्रचारो ॥
शुद्र आर्य्य जे हते तिन्हे हिन्दू कहि भाखो ।
वेद पठन को दोष पुराणनु में कथिराखो ॥
ये कुरीति काटन जगत दयानन्द प्रगटत भये ।
नाश किये पापी छली अनाचार सबदुरि गये २१॥

तुकबन्द

वेद सुनाये कोन । दयानन्द स्वामीजी ने ।
छली नशाये कोन । दयानन्द स्वामीजी ने ॥
लोक दयाचित धरी । दयानन्द स्वामीजी ने ।
आर्य्य सभा किनकरी । दयानन्द स्वामीजी ने ॥
पाप जाल किन हयो ॥ द० । भूमछेदनकिनुकियो द० ।
गुप्तकरे मतवाद । द०॥ किन मेटो अपवाद । द० ॥
किन राखो यह देश । द०॥ धर्म्म कियोउपदेश । द० ।
प्रतिमा खंडनकियो द० । सत मारग किनदियो ॥द०॥

देश२में जाय दया० । सभाकरी हितचाय द० ।
आकृति भाषा मांहि द० । वेद अर्थ वतलाय द० ॥
दई कुरीति वहाय द० । दीनी प्रीति दृढ़ाय द० ।
किंहि कीनो उद्धारद० । जगलीनो अवतार द० २२ ।

सन्ध्या तर्पण हवन हमारे हितके कारन ।
श्राद्ध अर्थ को कथन । हमारे हितके कारन ॥
अतिथिनुको सत्कार । ह० । सत्यक ध्यान प्रकाश । ह०
गो रक्षा कों कियो । ह० । विज्ञापन तिन दियो । ह०
किये वहुत उपकार ह० । योगाभ्यास विचार । ह०
स्वामीजी सव दुःख । ह० । सहे सकल तजि सुख ह०
दीनी सवे प्रतीत । ह० । मेंटी व्याह कुरीति । ह० ।

छन्द

मिटाई वाल व्याह की नेव । छुटाई भूतखोटा सेव
हटाई जैनखां की प्रीति । नसाई शेखसदीरीत ॥
अजी स्वामी भला कीना हमें जो ज्ञान यह दीना ।

सोरठा

वाल विवाह मिटाय दियो नियोग वताय के ।
आर्या भाष्य वनाय सवके मन हर्षित किये ॥

छप्पय

शिक्षोन्नति के हेतु संस्कृति शाला कीनी ।

सुमति बढ़ाई लोक कुमति सर्वांगी हरिलीनी ॥
सम्यक् ध्यान बताय ज्ञान सबही को दीनो ॥
मोक्ष होनके हेतु योग उपदेशहु कीनो ॥
जे अहंब्रह्म बनते फिरें ध्वंस कियोतिनकोजुमत ।
भेद दयो बतलाय के जीव आत्मा साधि सत २६॥

छंद भजन

श्रुति की महिमा बरनन कीनी पोलपुरान बताई।
जैन पन्थ को खंडन कीनो धर्मकी बाट चलाई ॥
कृस्तीन और मुसलमीन हूं जासों गए लजाई ।
सोस्वामी दयानन्द सरस्वती जगमें प्रगटे आई ॥
तिहिंगुन गावोरे भाई। कर्म मनवच हितचित लाई २७

छन्द भजनकी गतिमें

अरे मन सुमिरि स्वामी चरन । कियो पौरुष देखिता
लोक बाधा हरन। पाप नास्यो जाल काट्यो मिटि
धकरन करन । मूर्त्ति पूजा भेद खोल्यो दई ईश्वर
शरन । अरे मन सुमिरि स्वामी चरन २८ ॥

छन्द गति भजन

अरे मन मूढ़ करि यह चेत । जन्म स्वामीजी भये
सो जगत तारन हेत अरे० उपकार कीनो धर्मको
करि देश२ पयान । वेद जर्मनते मंगाये ताहि न
सूझ अयान । अरे० उपदेश करि२ नीति थापी जीति

सब जंजाल। कियो पौरुष लियो यह जस मिटैगो वघाचल॥ अरेमन मूढ़करि यह चेत। २९

छन्द गति भजन

यह भयो भारत दीन। प्राण निकसत नाहि जों विन नीर तलफे मीन। यह० विष घरें सिर धुनत डोले फणि मणी लई छीन। यह॥ रत्न हे या जग विषें श्री दयानन्द प्रवीन। यह। शेरतिहि विन लोक सूनो है गयो अतिहीन॥ यह भय ३०॥

छप्पय

इहि जगमें का सार देह मानुष की धरिवो।
या देहमें सार कहा परमारथ करिवो॥
परमारथ में सार यही जय धर्म उचरिवो।
धर्म सार उपदेश देश देशनु में करिवो॥
उपदेश सार कविशेर यह एक वेद आराधिवो।
सो स्वामी पूरण करो कठिन पन्थको साधिवो॥

सोरठा

श्री स्वामी दयानन्द कियो वियोग सदैब को।
को काटे दुख दुंद—— धर्म मार्ग उपदेश करि ३२॥

दोहा

स्वामी की निन्दा करें पाइ मनुज की देह।
महा अधम जगके विषें मूढ़ निगर खरतेह। ३३॥

छप्पय

गायत्रीको छीनि वामननु हमते लीनो ।
वैरागिन को पन्थ जगत में प्रचलित कीनो ॥
मूरति पूजा थापि करी निन्दा भगवति की ।
बेद छिपायो अर्थ अधर्मिनु यह अजुगति की ॥
सो स्वामी उपदेश करि मेंटि दई कीनी भली ।
आर्य्य धर्म्म थाप्यो प्रभू मेंटि दए कपटी छली । ३४ ॥

त्रोटक

जगते छल काटि बहाय दयो । प्रतिमा करिखंडन
धम्मे ठयो——श्रुति दोष दए तिन धोय ।
सबै करि भाष्य विलक्षण अर्थ जवे । ३५ ॥

त्रोटक

यह भारत दीन महा अतिही——इंहि भाग्य उदे
नहीं होय कभी ——अस ओसर पायजु ही न रह्यो
पछिताउ सदा वढ़ दुःख सहो । ३६ ॥

त्रोटक

मिलि है अब कोन सहाय हमें——करि है भवते
पुनि पार हमें——असको उपदेश हमें करिहै । जिंह
ते जिय जालु सबै जरिहै ३७ ॥

छप्पय

जग राखी जिनि टेक भयो ताको यश चहंदिक ।

जाने मेंटे वचन दियो सत पुरुषन तिहिं धिक ॥
हरीचन्द वलि नृपति पैज अपनी के काजें ।
करत विरे व्यवहार नेक नहि मनमें लाजें ॥
राम चन्द्र दशरथ कथा सुनराखी हम तुम सवै ।
तन मन धन वच कर्म करि आर्य्य धर्म्म राखो अवे ३८

सोरठा

जो दीनो उपदेश । ताई पे चलिराखि पन ।
कीजे उन्नति देश । स्वामीजी के कथन सम ३९

दोहा

पुष्कर तीरथ के विषय । मावस कार्त्तिकमास ।
भव मंडल ते अस्त भो । विद्या धर्म प्रकाश ४० ॥

॥ इति सन्ताप चालीसा ॥

विन्ती

दोहा

श्रीमत राज प्रतापसिंह भूषण आर्य्य समाज ।
होउ सहाई सो हमें करो सफल सव काज १ ॥
आर्य्यनु कूं अवलम्व नहि अन्य कछू जग मांहि ।
यदि धीरज प्रभु नाधरो तो सव काज नसाहिं २ ॥
मेंटो चिन्ता जगत की करिकें धर्म सहाय ।

स्वामीजी के मरण को दीजै शोक नशाय ३ ॥
परोपकार हित कारिणी सभारही है सोय
सो चेतन कीजै प्रभू जिंहि के मुखिया होय ॥
अरजी है हमरी यही आगें मरजो आप ॥
वेद भाष्य छपवाय कर मैटो सब संताप

॥ अलं ॥

गुरु विरजानन्द दण्डी
सन्दर्भ पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक .. 1150
दयानन्द महिला महा...

ओम्

ग्रंथ कर्ता की वनाई हुई अन्य पुस्तकें

नमस्ते	-)।
अवश्य कर्तव्योपदेश	-)।
ब्रह्म निरूपण	-)
संताप चालीसा	-)॥
कविविनोद	=)

सो रुपये के खरीदारोंको पांच रुपये कमीशन दियाजायगा व्यवहार पत्र द्वारा पूछ सकते हैं ॥